International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 10 Issue: 02 | Feb - 2026 SJIF Rating: 8.659 ISSN: 2582-3930

सावित्रीबाई फुले का महिला शिक्षा में प्रासंगिकता : एक अध्ययन

डॉ. अरूण कुमार

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग

राम लाल महाविद्यालय, माधवनगर, पुर्णियाँ विश्वविद्यालय, पुर्णियाँ

Email Id : arunpaswan5a@gmail.com,

शोध-सार

उन्नीसवीं शताब्दी का भारतीय समाज सामाजिक कुरीतियों, जातिगत भेदभाव और लैंगिक असमानता से ग्रस्त था। उस समय महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता था और उन्हें केवल घरेलू कार्यों तक सीमित माना जाता था। ऐसे दौर में सावित्रीबाई फुले ने महिला शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किए। उन्होंने न केवल लड़कियों के लिए विद्यालय खोले, बल्कि समाज में व्याप्त रूढ़ियों और अंधविश्वासों को चुनौती दी। यह शोध-पत्र सावित्रीबाई फुले के जीवन, विचारों और उनके द्वारा किए गए शैक्षिक प्रयासों का विश्लेषण करते हुए वर्तमान समय में महिला शिक्षा के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन प्रस्तुत करता है। सावित्रीबाई फुले की सोच केवल शिक्षा तक सीमित नहीं थी, बल्कि सामाजिक समानता, स्त्री-स्वतंत्रता और मानवाधिकारों की स्थापना से भी जुड़ी हुई थी। आज भी जब शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक असमानता, बाल विवाह, महिला अशिक्षा और सामाजिक बाधाएँ मौजूद हैं, तब सावित्रीबाई फुले के विचार मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। इस आलेख से यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला सशक्तिकरण और समानतापूर्ण समाज के निर्माण में सावित्रीबाई फुले की भूमिका ऐतिहासिक ही नहीं, बल्कि समकालीन दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शब्दकुंजी : महिला शिक्षा, स्त्री सशक्तिकरण, सामाजिक सुधार, लैंगिक समानता एवं शिक्षा आंदोलन इत्यादि

भूमिका :

भारतीय समाज में महिला शिक्षा का इतिहास संघर्ष और परिवर्तन की कहानी रहा है। प्राचीन काल में जहाँ महिलाओं को शिक्षा का अधिकार प्राप्त था, वहीं मध्यकालीन और औपनिवेशिक समय में उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई। महिलाओं को शिक्षा से दूर रखा गया और उन्हें सामाजिक बंधनों में जकड़ दिया गया। ऐसे समय में सावित्रीबाई फुले ने महिला शिक्षा की मशाल जलाकर समाज में नई चेतना का संचार किया। सावित्रीबाई फुले भारत की पहली महिला शिक्षिका मानी जाती हैं। उन्होंने अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए पहला विद्यालय स्थापित किया। यह केवल एक शैक्षिक पहल नहीं थी, बल्कि सामाजिक क्रांति की शुरुआत थी। उन्होंने शिक्षा को महिलाओं की मुक्ति का माध्यम माना और समाज में व्याप्त लैंगिक असमानता को समाप्त करने के लिए संघर्ष किया।

आज जब हम महिला शिक्षा की बात करते हैं, तो सावित्रीबाई फुले का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। उनके विचार आधुनिक शिक्षा प्रणाली और महिला सशक्तिकरण के लिए प्रेरणास्रोत हैं। इस शोध-पत्र का उद्देश्य

सावित्रीबाई फुले के कार्यों और विचारों का अध्ययन करते हुए यह समझना है कि वर्तमान समय में महिला शिक्षा के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता क्या है।

सावित्रीबाई फुले भारतीय इतिहास की एक ऐसी महान विभूति हैं, जिन्हें "भारत की प्रथम महिला शिक्षिका" के रूप में जाना जाता है। वे न केवल शिक्षा की क्षेत्र में अग्रणी थीं, बल्कि महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सुधार, जाति-व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष और विधवा-विवाह जैसे मुद्दों पर भी उन्होंने क्रांतिकारी कार्य किए। 19वीं शताब्दी के उस दौर में जब महिलाओं को घर की चारदीवारी में कैद रखा जाता था, पढ़ना-लिखना तो दूर की बात थी, तब सावित्रीबाई ने न केवल खुद को शिक्षित किया बल्कि हजारों लड़कियों को शिक्षा का प्रकाश प्रदान किया। उनका जीवन संघर्ष, साहस, समर्पण और मानवता की मिसाल है।

सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के नायगांव नामक छोटे से गांव में एक साधारण माली (मालिन) समुदाय (जो उस समय शूद्र माने जाते थे) में हुआ था। उनके पिता का नाम "खंडोजी नवसे पाटिल" था, जो एक छोटे किसान थे, और माता का नाम "लक्ष्मीबाई" था। सावित्रीबाई तीन भाई-बहनों में सबसे बड़ी थीं। उस समय बाल-विवाह प्रथा बहुत प्रचलित थी और लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था। मात्र 9-10 वर्ष की उम्र में ही उनका विवाह "ज्योतिराव फुले" से हो गया। ज्योतिराव उस समय पढ़े-लिखे और प्रगतिशील विचारों वाले युवक थे। उन्होंने सावित्रीबाई को पढ़ना-लिखना सिखाने का बीड़ा उठाया। ज्योतिबा ने सावित्रीबाई को घर पर ही शिक्षा दी। बाद में सावित्रीबाई ने अहमदनगर के "नॉर्मल स्कूल" और पुणे में शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1846-47 में उन्होंने अपनी शिक्षक परीक्षा उत्तीर्ण की और योग्य शिक्षिका बन गईं। यह उस समय के लिए एक असाधारण उपलब्धि थी, क्योंकि महिलाओं के लिए शिक्षा का द्वार लगभग बंद था।

सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले ने मिलकर 1 जनवरी 1848 को पुणे के "भिड़े वाडा" में लड़कियों के लिए भारत का पहला स्कूल खोला। शुरुआत में केवल 9 लड़कियां आईं, लेकिन धीरे-धीरे संख्या बढ़ती गई। उस समय समाज में यह कार्य इतना क्रांतिकारी था कि लोग विरोध करते थे। सावित्रीबाई जब स्कूल जातीं तो रूढ़िवादी लोग उन पर पत्थर फेंकते, गंदगी डालते और अपशब्द कहते थे। लेकिन वे रुकी नहीं। वे दूसरी साड़ी साथ रखती थीं ताकि गंदगी डालने पर बदल सकें और पढ़ाने का काम जारी रख सकें। इस स्कूल में शूद्र, अति-शूद्र और अन्य पिछड़े वर्गों की लड़कियों को पढ़ाया जाता था। उन्होंने जाति-भेदभाव को तोड़ने का प्रयास किया। बाद में उन्होंने कई और स्कूल खोले - कुल मिलाकर 18 स्कूलों की स्थापना में उनका योगदान रहा। 1851 तक इन स्कूलों में 150 से अधिक छात्राएं पढ़ रही थीं।

साहित्य समीक्षा :

साहित्य समीक्षा में सावित्रीबाई फुले के योगदान पर विभिन्न शोधकर्ताओं के कार्यों का क्रमबद्ध विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। ये अध्ययन उनके जीवन, महिला शिक्षा में भूमिका, सामाजिक सुधार, दलित-वंचित उत्थान तथा समकालीन प्रासंगिकता पर केंद्रित हैं। नीचे दिए गए संदर्भों को क्रम से समीक्षित किया गया है :-

पाल, अमित (2024)[1] इस अध्ययन में लेखक सावित्रीबाई को महिला शिक्षा की अग्रदूत के रूप में स्थापित करते हैं। उन्होंने 1848 में पुणे में भारत के पहले बालिका विद्यालय की स्थापना पर जोर दिया है, जहां उन्होंने जाति-आधारित भेदभाव के बावजूद लड़कियों को शिक्षा प्रदान की। लेखक का मत है कि उनके प्रयासों ने सामाजिक

सुधार की नींव रखी, जो आज भी लिंग समानता और शिक्षा पहुंच के लिए प्रासंगिक है। यह शोध उनके संघर्ष (पत्थरबाजी, गंदगी फेंकना) को उजागर कर वर्तमान महिला सशक्तिकरण आंदोलनों से जोड़ता है।

मंडल, रंजीत कुमार (2024)[2] ने सावित्रीबाई को भारत की पहली महिला शिक्षिका के रूप में चित्रित करते हैं, जिन्होंने ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर 18 स्कूल स्थापित किए। अध्ययन में उनके शिक्षण प्रशिक्षण (अमेरिकी मिशनरी स्कूल से) और महिलाओं के लिए शिक्षा को मुक्ति का माध्यम बनाने पर बल है। प्रासंगिकता के संदर्भ में, लेखक बताते हैं कि उनकी विरासत आज की डिजिटल और समावेशी शिक्षा नीतियों में जीवंत है, जहां लिंग आधारित बाधाएं अभी भी मौजूद हैं।

थिलाकोम, हेमलेथा (2023)[3] यह शोध विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के संदर्भ में सावित्रीबाई के योगदान की प्रासंगिकता पर केंद्रित है। लेखक तर्क देते हैं कि NEP-2020 की समावेशी शिक्षा, लिंग समानता और वंचित वर्गों की पहुंच के लक्ष्य सावित्रीबाई के दृष्टिकोण से प्रेरित हैं। उन्होंने शिक्षा को सामाजिक न्याय का साधन माना, जो आज की नीतियों में प्रतिबिंबित होता है, जैसे लड़कियों की सकल नामांकन अनुपात बढ़ाना और STEM में महिलाओं की भागीदारी।

पुजारी, अप्पन्ना एस. (2025)[4] यह ऐतिहासिक अध्ययन सावित्रीबाई के जीवन को महिला सशक्तिकरण के परिप्रेक्ष्य में देखता है। लेखक उनके विधवा आश्रम, अनाथालय और कविताओं (जैसे "क्या उन्हें मनुष्य कहा जाए") का उल्लेख कर शिक्षा को सशक्तिकरण का हथियार बताते हैं। प्रासंगिकता आज की चुनौतियों (बाल विवाह, लिंग भेदभाव) में दिखती है, जहां उनकी विरासत महिलाओं के अधिकारों के लिए प्रेरणा स्रोत बनी हुई है।

चंद, ज्ञानय लाल, सोहनय लूसी (2024)[5] ने सावित्रीबाई को महिलाओं और दलितों के अधिकारों की अग्रदूत मानते हैं। अध्ययन में सत्यशोधक समाज के माध्यम से उनके योगदान और शिक्षा को छुआछूत मिटाने के साधन के रूप में देखा गया है। वर्तमान में, यह प्रासंगिक है क्योंकि दलित-महिला शिक्षा में असमानता बनी हुई है, और उनकी दृष्टि समावेशी विकास के लिए मार्गदर्शक है।

वानखेड़े, एस.एल. (2020)[6] यह पुराना लेकिन आधारभूत अध्ययन सावित्रीबाई को "क्रांतिज्योति" कहकर उनके शिक्षा क्षेत्र में अग्रणी कार्यों पर प्रकाश डालता है। लेखक उनके द्वारा स्थापित स्कूलों और शिक्षण पद्धति को क्रांतिकारी बताते हैं। प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है, क्योंकि शिक्षा में समानता का संघर्ष जारी है।

कुमार, अभय[7] दलित विमर्श के परिप्रेक्ष्य में लेखक सावित्रीबाई को भारत की पहली महिला शिक्षिका के रूप में देखते हैं, जिन्होंने दलित महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया। अध्ययन दलित आंदोलन में उनकी भूमिका को उजागर करता है, जो आज के सामाजिक न्याय आंदोलनों में प्रासंगिक है।

इंगोले, अनघा[8] यह कार्य सावित्रीबाई के जीवन और विचारों पर केंद्रित है, जहां शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम माना गया है। लेखक उनके काव्य और सुधार कार्यों को जोड़कर वर्तमान महिला शिक्षा की चुनौतियों (ड्रॉपआउट, सुरक्षा) से तुलना करते हैं।

उद्देश्य :

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1. सावित्रीबाई फुले के जीवन, विचारों और शैक्षिक प्रयासों का ऐतिहासिक विश्लेषण करना – उनके जन्म, शिक्षा प्राप्ति, पहला बालिका विद्यालय स्थापना (1848), 18 स्कूलों की स्थापना तथा सामाजिक विरोध के बावजूद किए गए संघर्ष का विस्तृत अध्ययन करना।

2. महिला शिक्षा में उनके योगदान की जांच करना – 19वीं शताब्दी के भारतीय समाज में महिलाओं की अशिक्षा, जातिगत भेदभाव और लैंगिक असमानता के संदर्भ में उनके द्वारा बालिकाओं (विशेषकर वंचित वर्गों) को शिक्षा प्रदान करने की क्रांतिकारी भूमिका का मूल्यांकन करना।

3. सामाजिक सुधारों और स्त्री सशक्तिकरण में उनकी भूमिका का अध्ययन करना – विधवा विवाह प्रोत्साहन, छुआछूत विरोध, सत्यशोधक समाज, स्त्री-आश्रम, बाल-हट, काव्य रचना तथा अन्य सुधार कार्यों के माध्यम से महिलाओं और दलितों के अधिकारों की स्थापना में उनके योगदान का विश्लेषण करना।

4. वर्तमान समय में महिला शिक्षा की स्थिति और चुनौतियों का अवलोकन करना – समकालीन भारत में लैंगिक असमानता, बाल विवाह, ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका ड्रॉपआउट, गरीबी तथा सामाजिक बाधाओं जैसी मौजूदा समस्याओं का अध्ययन करना।

5. सावित्रीबाई फुले की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना – उनके विचारों (शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन, समानता, न्याय और मानवाधिकार का माध्यम मानना) की वर्तमान शिक्षा नीतियों (जैसे NEP-2020, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ), महिला सशक्तिकरण अभियानों तथा नारीवादी दृष्टिकोण में प्रासंगिकता का विश्लेषण करना, तथा यह समझना कि उनके योगदान आज भी समावेशी और समानतापूर्ण समाज निर्माण के लिए मार्गदर्शक कैसे हैं।

सामाजिक सुधारों में योगदान

सावित्रीबाई केवल शिक्षिका ही नहीं थीं, बल्कि एक समाज सुधारक भी थीं। उन्होंने "विधवा विवाह'' को प्रोत्साहन दिया और विधवाओं के अधिकारों के लिए आवाज उठाई। उस समय विधवाओं को सिर मुंडवाना पड़ता था, सफेद साड़ी पहननी पड़ती थी और उन्हें अपमानित किया जाता था। सावित्रीबाई ने विधवाओं को आश्रय दिया और उनके पुनर्विवाह करवाए। वे "छुआछूत'' और "जाति-व्यवस्था'' के कट्टर विरोधी थीं। ज्योतिबा के साथ मिलकर उन्होंने "सत्यशोधक समाज'' (1873) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य था सत्य की खोज और अंधविश्वासों का खात्मा। यह समाज निचली जातियों और महिलाओं के उत्थान के लिए काम करता था। सावित्रीबाई ने अनाथ बच्चों के लिए "बाल-हट'' भी खोला। वे अनाथ लड़कियों को गोद लेती थीं और उनकी शिक्षा-दीक्षा का ध्यान रखती थीं। उन्होंने विधवाओं के लिए "स्त्री-आश्रम'' भी स्थापित किया जहां वे सम्मानपूर्वक रह सकें।

काव्य रचना और साहित्यिक योगदान

सावित्रीबाई मराठी भाषा की प्रथम कवयित्री (आदिकवियत्री) मानी जाती हैं। उन्होंने कई कविताएं लिखीं जो समाज सुधार, शिक्षा और महिला मुक्ति पर केंद्रित थीं। उनकी प्रमुख कृति "काव्य फुले'' (1854) और "बावन काशी

सुबोध रत्नाकर'' हैं। उनकी कविताओं में साहस और समानता की भावना झलकती है। एक प्रसिद्ध कविता में वे लिखती हैं -

प्लेग महामारी में बलिदान और मृत्यु

1897 में पुणे में प्लेग महामारी फैली। सावित्रीबाई ने गरीबों और प्रभावितों की सेवा में जुट गईं। वे प्लेग पीड़ित बच्चों को अपने कंधे पर उठाकर अस्पताल ले जाती थीं। इसी दौरान वे स्वयं प्लेग से संक्रमित हो गईं। 10 मार्च 1897 को मात्र 66 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। अंतिम समय तक वे मानव सेवा में लगी रहीं।

विरासत और सम्मान

आज सावित्रीबाई फुले को "शिक्षा की देवी'', "नारी मुक्ति की जननी'' और "क्रांतिज्योति'' कहा जाता है। पुणे में "सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय'' उनके नाम पर है। भारत सरकार और महाराष्ट्र सरकार उन्हें सम्मानित करती है। उनकी जयंती 3 जनवरी को बड़े स्तर पर मनाई जाती है। सावित्रीबाई का जीवन हमें सिखाता है कि शिक्षा ही वह हथियार है जो समाज की जड़ों को बदल सकता है। उन्होंने साबित किया कि यदि इच्छाशक्ति हो तो कोई भी बाधा बड़ी नहीं होती। उनके संघर्ष ने न केवल महिलाओं को बल्कि पूरे समाज को नई दिशा दी। आज जब हम महिला शिक्षा, समानता और सशक्तिकरण की बात करते हैं, तो सावित्रीबाई फुले का नाम सबसे पहले आता है। वे एक प्रेरणा हैं न केवल महिलाओं के लिए, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए जो समाज में बदलाव लाना चाहता है। उनका जीवन छोटा था, लेकिन प्रभाव अनंत है।

महिला शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति अत्यंत निम्न थी। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था और यह माना जाता था कि शिक्षा महिलाओं के लिए अनावश्यक है। इस समय बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा और जातिगत भेदभाव जैसी कुरीतियाँ प्रचलित थीं। ऐसे माहौल में महिला शिक्षा का प्रश्न केवल शैक्षिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का विषय था।

महिला शिक्षा में सावित्रीबाई फुले का योगदान

सावित्रीबाई फुले ने 1848 में लड़कियों के लिए पहला विद्यालय स्थापित किया। उन्होंने न केवल शिक्षा का प्रसार किया, बल्कि दलित और वंचित वर्ग की लड़कियों को भी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने शिक्षा को समानता का माध्यम माना और समाज के हर वर्ग तक शिक्षा पहुँचाने का प्रयास किया। उनका मानना था कि शिक्षा से ही महिलाओं की स्थिति में सुधार संभव है।

सामाजिक सुधार और स्त्री सशक्तिकरण

सावित्रीबाई फुले केवल शिक्षिका ही नहीं थीं, बल्कि एक महान सामाजिक सुधारक भी थीं। उन्होंने विधवा विवाह, बाल विवाह के विरोध और महिलाओं के अधिकारों के लिए कार्य किया। उन्होंने 'महिला सेवा मंडल' की स्थापना की और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया। उनके विचारों में स्त्री को समाज का समान भागीदार माना गया।

सावित्रीबाई फुले की शैक्षिक विचारधारा

सावित्रीबाई फुले का मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का साधन है। उन्होंने शिक्षा को मानवाधिकार के रूप में देखा। उनकी विचारधारा में समानता, न्याय और स्वतंत्रता के तत्व प्रमुख थे। वे मानती थीं कि शिक्षित महिला ही समाज को नई दिशा दे सकती है।

वर्तमान समय में महिला शिक्षा की स्थिति

आज भारत में महिला शिक्षा में काफी प्रगति हुई है, लेकिन अभी भी कई चुनौतियाँ मौजूद हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा की स्थिति कमजोर है। गरीबी, सामाजिक बाधाएँ, बाल विवाह और लैंगिक भेदभाव आज भी शिक्षा में बाधा बनते हैं। ऐसे में सावित्रीबाई फुले के विचार अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं।

सावित्रीबाई फुले की प्रासंगिकता

सावित्रीबाई फुले के विचार आज भी महिला सशक्तिकरण के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने शिक्षा को अधिकार और समानता का माध्यम माना। आज जब हम 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे अभियानों की बात करते हैं, तो सावित्रीबाई फुले की सोच उसमें स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

शिक्षा और सामाजिक समानता

महिला शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक समानता की नींव है। सावित्रीबाई फुले ने इस तथ्य को बहुत पहले समझ लिया था। उन्होंने शिक्षा को जाति, लिंग और वर्ग के भेदभाव से मुक्त करने का प्रयास किया।

नारीवादी दृष्टिकोण और सावित्रीबाई

सावित्रीबाई फुले के विचार आधुनिक नारीवादी आंदोलन से जुड़े हुए हैं। उन्होंने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। उनकी कविताएँ और लेखन महिला चेतना को जागृत करने का कार्य करते हैं।

शिक्षा नीति और सावित्रीबाई फुले

वर्तमान शिक्षा नीति में समान अवसर और समावेशी शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। यह लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

निष्कर्ष

महिला शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की नींव रखी। आज जब हम महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं, तो सावित्रीबाई फुले का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं और समाज को समानता, न्याय और शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। महिला शिक्षा के क्षेत्र में उनके प्रयास के वल ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए मार्गदर्शक हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि उनके विचारों और कार्यों को शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाए और समाज में जागरूकता बढ़ाई जाए।

संदर्भ-सूची:

1. पाल, अमित (2024): सावित्रीबाई फुले: महिला शिक्षा और सामाजिक सुधार की अग्रदूत, EPRA International Journal of Multidisciplinary Research, खंड 10, अंक 9.

2. मंडल, रंजीत कुमार (2024): सावित्रीबाई फुले: भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, Journal of Advanced Research in English & Education, खंड 9, अंक 3.

3. थिलाकोम, हेमलेथा (2023): सावित्रीबाई फुले और शिक्षा में उनका योगदान (NEP-2020 के संदर्भ में), Journal of Research Administration, खंड 5, अंक 2.

4. पुजारी, अप्पन्ना एस. (2025): सावित्रीबाई फुले: महिला सशक्तिकरण और शिक्षा का ऐतिहासिक अध्ययन, अक्षरसूर्य जर्नल, खंड 9, अंक 2.

5. चंद, ज्ञानय लाल, सोहनय लूसी (2024): सावित्रीबाई फुले: महिलाओं और वंचित वर्गों के अधिकारों की अग्रदूत, ShodhKosh Journal, खंड 5, अंक 3.

6. वानखेड़े, एस.एल. (2020): क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले: शिक्षा पर अग्रणी कार्य, International Education and Research Journal.

7. कुमार, अभय, फर्स्ट लेडी टीचर ऑफ इंडिया: सावित्रीबाई फुले पर दलित विमर्श.

8. इंगोले, अनघा, सावित्रीबाई फुले: जीवन और विचार.